प्रशिक्षण के लिए एक कंप्यूटर केंद्र का निर्माण @

कम्प्यूटर प्रशिक्षण का केंद्र कम लागत वाली कुछ लाख रूपये के रूप में बनाना प्रधान कार्यालय से कॉलेज तक सभी के लिए एक आश्चर्य था। कोई भी उम्मीद नहीं कर रहा था कि उन दिनों में कंप्यूटर केंद्र के निर्माण की लागत कुछ लाख रूपये होगी , कि केवल बिल्डिंग निर्माण कि अनुमानित लागत ही पचास लाख रुपये से ऊपर आंकित कि जा रही थी ।

केस की पृष्ठभूमि

यह बात सन वर्ष 1984 की है। कंप्यूटर का उपयोग केवल बहुत बड़ी व्यावसायिक संगठनों और अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों तक ही सीमित था। आमतौर पर उनके पास मेन फ़्रेम कंप्यूटर थे, जबकि मिनी कंप्यूटरों का उपयोग भी शुरू हो गया था । भारतीय बैंक एसोसिएशन ने बैंकों में कंप्यूटरों को शुरू करने के लिए बैंकों में विभिन्न कर्मचारी संघों के साथ समझौता किया था। हेड ऑफिस ने बैंक के शीर्ष स्टाफ कॉलेज के प्रधानाचार्य को एक पत्र भेजा था जिसमे महाविद्यालय को अधिकारियों और अन्य लोगों कंप्यूटर उपयोग करने विकसित करने के प्रशिक्षण के लिए कार्रवाई की योजना का प्रस्ताव दे, ताकि जब बैंक कंप्यूटर लगाने की शुरुआत करे तो वे उसका उपयोग करने में समर्थ हो सकें । प्रिंसिपल ने वैश्यपयन से इस पत्र का जवाब देने के लिए कहा क्योंकि कॉलेज में किसी और के पास कंप्यूटर का कोई ज्ञान नहीं था और प्रिंसिपल जानते थे कि वैशमपयन ने बैंक के स्टाफ कॉलेज में शामिल होने से पहले एक बड़ी इंजीनियरिंग कंपनी में काम किया था, जहां उन्होंने वाणिज्यिक विभाग के लिए कंप्यूटर प्रोग्राम (सॉफ्टवेयर) विकसित किया था और एक केस स्टडी लिखी थी जिसे देश के एक अग्रणी प्रबंधन जर्नल में प्रकाशित किया गया था।

वैशमपयन को बैंक के एपेक्स कॉलेज में 6 अन्य के साथ (गैर-बैंकिंग पृष्ठभूमि वाले) वरिष्ठ संकाय सदस्यों के रूप में नियुक्त किया गया था, जो बैंक में नए विचारों को लाएं और उस ट्रेनिंग कॉलेज को स्टाफ शीर्ष कॉलेज (महाविद्यालय) में परिवीक्षाधीन (transform) करने के लिए एक बदलाव एजेंट की तरह काम कर सकें। वैशमपयन शीर्ष कॉलेज में उच्च अधिकारियों (आमतौर पर 15-20 वर्ष या अधिक का अनुभव वाले) के लिए “संगठन और तरीके”,”प्रबंधन सूचना प्रणाली”, “प्रबंध संगठनात्मक परिवर्तन” जैसे कई नए कार्यक्रम तैयार करने और संचालित कर चुके थे, जो कि कोई अन्य संकाय सदस्य नहीं कर रहा था। बैंक 1969 में राष्ट्रीयकृत वाणिज्यिक बैंकों में नंबर दो का स्थान प्राप्त कर चूका था । मुख्य प्रबंधक / क्षेत्रीय प्रबंधक स्तर पर करीब 100 अधिकारी थे और वरिष्ठ प्रबंधक स्तर पर करीब 300 कर्मचारी थे। श्री वैशमपयन ने बैंकों में पहली बार उच्च अधिकारियों के लिए एक दो सप्ताह सामान्य प्रबंधन कार्यक्रम भी शुरू किया था। उस की डिज़ाइन में “कंप्यूटर बोध” पर एक 3 घंटे का मॉड्यूल भी शामिल था, जिसके लिए पिछले प्रिंसिपल ने उन्हें प्रशंसा के बजाय "आपको बैंक में शब्द कंप्यूटर का प्रयोग करने की हिम्मत कैसे हुई" कहकर फटकार लगाई थी। पिछले प्रिंसिपल मूलभूत पृष्ठभूमि (कानून, कार्मिक प्रबंधन और औद्योगिक संबंध क्षेत्र, जिसमें उन्होंने अपने जीवन का अधिकतर समय बिताया था) को देखते हुए यह अप्रत्याशित नहीं था । लकिन इस तरह से परेशान किये जाने ने वैशमपयन को बहुत झुंझला दिया था।

DO NOT COPY

वैशमपयन अपनी विद्युत और मैकेनिकल इंजीनियरिंग, लागत लेखा (cost accounting) और प्रबंधन की पृष्ठभूमि के साथ-साथ विभिन्न विषयों में रूचि रखने वाले व्यक्ति थे। नए काम करने और काम करने के लिए नए तरीके खोजने के लिए हमेशा जिज्ञासु रहते थे । एक दिन उन्होंने कॉलेज के इलेक्ट्रीशियन के साथ एक कमरे में प्रवेश किया और पूछा कि क्यों वहां दो लंबी पुख्ता प्लेटफार्म बने हैं जबकि मशीन केवल एक पर हैं। इलेक्ट्रीशियन ने जवाब दिया कि मशीन केंद्रीकृत एयर कंडीशनिंग के लिए कंप्रेसर है जिसे भविष्य में एक और कंप्रेसर डालकर विस्तारित (expand) किया जा सकता है। यह पूछे जाने पर कि इस पर कितना खर्च होगा, प्रबुद्ध बिजली मिस्त्री ने कहा कि इसकी लागत लगभग 200000 रुपये हो सकती है ।

इसी तरह एक दिन वे एक सफाई कर्मचारी साथ तहखाने (basement) के एक कमरे में चले गए केवल यह देखने के लिए कि आखिर वह वहां क्यों जाता है और करता क्या है। उन्होंने पाया कि वह कमरा 30 * 60 फीट का एक बड़ा हॉल था, जिसका उपयोग अपशिष्ट (waste) पेपर, टूटी फर्नीचर कचरा भंडारण आदि के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था। वह क्षेत्र भारत के "ए" वर्ग शहर ("A: class city) के आलीशान (पॉश क्षेत्र) में था, जहाँ मासिक किराया लगभग १० रुपये प्रति वर्ग फुट था। । "इस विशाल क्षेत्र, जिसकी कीमत लगभग 18000 रुपये प्रति माह है (जो प्रिंसिपल के वेतन का चार गुना है) उसका उपयोग केवल कचरा भंडारण में हो रहा है" सोच कर वे सर खुजाने लगे।

पत्र का उत्तर

शुरू में श्री वैशमपयन ने पल्ला झड़ने कि कोशिश की, क्योंकि वह बहुत कुपित थे और कम्प्यूटरीकरण के मुद्दे पर नाराजगी महसूस कर रहे थे, खासकर इस लिए क्योंकि पत्र कार्मिक विभाग से आया था जो पिछले प्रधानाचार्य के आधीन था था, जिसने सिर्फ एक साल पहले उसे "कंप्यूटर बोध" विषय पढ़ाने पर फटकार लगाई थी। लेकिन फिर वे उस पत्र का उत्तर लिखने को नहीं कर सके क्योंकि नया प्रिंसिपल एक "अच्छा" व्यक्ति था, जिन्होंने कभी भी उनकी निंदा नहीं की थी और अनुसंधान जैसी पहलों को पूरा समर्थन दे रहे थे।

प्रस्ताव

उत्तर में श्री वैश्यमयन ने कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए एक विस्तृत योजना विकसित की, जो आंशिक रूप से प्रतिशोध के कारण हुई थी और आंशिक रूप से इसका सबूत था कि वह क्या सोच सकता था। संक्षेप में प्रस्ताव में निम्नलिखित निहित है –

1. हार्डवेयर रखरखाव प्रशिक्षण: उन लोगों के लिए जो बैंक के विभिन्न कंप्यूटर केंद्रों का निर्माण करवा रहे है रहे थे, जिन्हें आंचलिक / क्षेत्रीय कार्यालयों और साथ ही प्रधान कार्यालय में में स्थापित होना है। यह प्रशिक्षण कंप्यूटर आपूर्तिकर्ताओं / रखरखाव एजेंसियों द्वारा दिया जाए।
2. सॉफ्टवेयर विकास प्रशिक्षण: बैंक में विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए सॉफ्टवेयर के विकास में शामिल होने वाले लोगों को प्रशिक्षण देने के लिए। इसके लिए आईआईटी, आईआईएम आदि जैसे टीसीएस और शैक्षणिक संस्थानों जैसी कंपनियों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाए।

3. उपयोगकर्ता उन्मुखी (user oriented) प्रशिक्षण:

क) आंचलिक / क्षेत्रीय कार्यालयों (जहां कंप्यूटर स्थापित होंगे) के अधिकारियों के लिए जो उन्हें कंप्यूटर के उपयोग से परिचित कराने में मदद करें ताकि वे उच्च गति पर गुणवत्ता के फैसले के लिए कंप्यूटर पर काम कर सकें और शुरू कर सकें। आंचलिक / क्षेत्रीय और प्रधान कार्यालयों में विभागों के सभी अधिकारियों और उनमें से प्रत्येक को रिपोर्ट करने वाले दो अधिकारियों को यह प्रशिक्षण दिया जाए।

बी) प्रत्येक शाखा के एक या दो अधिकारी / कर्मचारी, जो समय-समय पर नियमित या अनौपचारिक (adhoc) आधार पर क्षेत्रीय और उच्चतर कार्यालयों को सूचना भेजते हैं, ताकि कोई गलती न हो और डेटा को सही ढंग से समय पर भेजा जा सके। यदि वे परिचित (familiar) नहीं होंगे, तो वे सही स्वरूपों में सूचना भेजने में गलती कर सकते हैं।

उपर्युक्त 3 (बी) के लिए प्रस्ताव ने बैंक के 12 क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्रों में संकाय सदस्यों द्वारा आयोजित आधे दिन के प्रशिक्षण मॉड्यूल का सुझाव दिया, जिसके लिए एपेक्स कॉलेज द्वारा प्रशिक्षण और आवश्यक किट भी प्रदान किए जाएंगे।

उपरोक्त सुझाव 3 (ए) का मतलब यह है कि करीब 1200 लोगों को तीन दिन का व्यावहारिक व क्रियाशील (hands on) प्रशिक्षण दिया जाना, ताकि वे अपने कार्यालय में कम्प्यूटर सराय को छूने और उनका उपयोग करने का आश्वस्त हो सकें। एक अग्रणी प्रबंधन संस्थान कंप्यूटर बोध के लिए 3 दिन के कार्यक्रम का संचालन कर रहा था, जिसमें प्रशिक्षण शुक्ल 3000 रुपये प्रति प्रतिभागी। इसका मतलब है कि 1200 अधिकारियों / प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए बैंक को लगभग 36 इसका लाख रुपए व्यय करने होंगे।

इसके अलावा संस्थान प्रति वर्ष एक या दो से ज्यादा कार्यक्रमों का संचालन नहीं कर सकता है(प्रत्येक में औसतन २० प्रशिक्षार्थी। प्रायोजित प्रशिक्षण देश के अन्य प्रमुख प्रबंधन संस्थानों में उन दिनों किया नहीं जाता था । इस प्रकार 1200 लोगों के करीब प्रशिक्षण 7-10 साल लग सकते हैं। सभी व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं था। प्रस्ताव में लगभग 6 लाख रुपये की कीमत पर एपेक्स कॉलेज में प्रशिक्षण के लिए 20 सीटों वाला कंप्यूटर ट्रेनिंग सेंटर के निर्माण करने का सुझाव दिया गयाथा । कॉलेज के दो / तीन संकाय सदस्यों को इस उद्देश्य के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। श्री वैश्यपैयन ने यह प्रशिक्षण स्वयं ही शुरू करने की पेशकश की। महाविद्यालय के एक और संकाय सदस्य ने भी इस कदम में शामिल होने की पेशकश की।

प्रधान कार्यालय का उत्तर

प्रधान कार्यालय समग्र योजना से काफी प्रभावित था, लेकिन दो बिंदुओं पर शंकित था । एक, लागत को कम करके आंका गया था, जो उनके विचार में उनके एक करोड़ रुपये से कम नहीं होगा, और दूसरा कि यह गलत अनुमान सारी व्यवहार्यता (viability) गलत कर देगा । इसलिए इसे भलीभाँत समझाने के लिए कहा। श्री वैशमपयन भी अड़ गए और प्रधान कार्यालय को जवाब दिया कि लागत की गणना सही थी। प्रधान कार्यालय ने पूछा कि निर्माण और बिजली के काम के किसी भी लागत के बिना कंप्यूटर केंद्र कैसे बनाया जाएगा? श्री वैश्यपनियन ने उत्तर दिया कि वे सभी विवरणों को साझा करने के लिए तैयार थे, यदि मुख्य कार्यालय यदि महाविद्यालय में कंप्यूटर केंद्र निर्माण के लिए

DO NOT COPY

पहले सहमति भेज दे कुछ महीनों के बाद प्रधान कार्यालय ने इसकी सहमति का संकेत दिया और दो अधिकारियों को निर्देश दिया कि कैसे केन्द्र बनाया जाएगा।

श्री वैश्यपनयन ने सभी बेहतरीन अंक बताते हुए बताया कि कंप्यूटर केंद्र 10 पीसी एक्सटी कंप्यूटर (जो कि भारतीय बाजार में प्रवेश कर रहे थे) और एसी डक्टिंग काम/ बिजली के कमरे में दूसरे कंप्रेसर के अलावा बिना किसी भी अन्य महत्वपूर्ण व्यय के बिना बनाया जाएगा। लाइब्रेरी को तहखाने में बड़े (अप्रयुक्त) हॉल में स्थानांतरित कर दिया जाएगा (जो लाइब्रेरी से लगभग दो गुना था)। लाइब्रेरियन पहले नहीं मान रहीं थीं पर उनको प्रशासनिक कर्मचारियों ने मनाया था जो खराब एयर कंडीशनिंग के कारण परेशानी का सामना कर रहे थे और दूसरा कंप्रेसर लग जाने के बाद ठंडी हवा का आनंद ले पा रहे थे।

हेड ऑफिस द्वारा अनुमोदन

हेड ऑफिस के लोग आश्चर्यचकित थे एक अतिरिक्त उपलब्ध जगह का उपयोग करते हुए कम लागत वाले समाधान को देख कर, सबको दिखती थी लेकिन उपयोग पर कोई भी विचार नहीं करता था । शुरू में यह एक पार्किंग क्षेत्र के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था, लेकिन कुछ संरचनात्मक अड़चनों के कारण ऐसा नहीं हो सका। चूंकि स्तंभ संरचना के लिए नींव और आधार कार्य पहले से ही किया चुका था, इस क्षेत्र पर छत बनाके ढक कर कमरे को बनाया गया था।

प्रधान कार्यालय ने तुरंत प्रस्ताव को मंजूरी दी और इस तरह बैंकिंग उद्योग में प्रशिक्षण के लिए पहला कंप्यूटर केंद्र बना। बाद में श्री वैशमपयन को बैंक के कम्प्यूटरीकरण के लिए प्रधान कार्यालय समिति में शामिल किया गया।

कुछ संकाय सहयोगियों का मानना था कि श्री वैश्यपयन ने केवल प्रधान कार्यालय को धोखा दिया है। संकाय सदस्य (कार्मिक प्रबंधन शिक्षण) इसका विरोध करता था क्योंकि यह (कम्प्युटरीकरण) श्रम के मुद्दों को छूता था, हालांकि उन्होंने ही पहली बार टाइपिंग के लिए सुविधाओं का उपयोग करना शुरू कर दिया था। लेकिन वैश्यपयन अब सोच रहे थे कि क्या कंप्यूटर केंद्र बनना एक अच्छा व्यवसायिक अवसर भी हो सकता है।

DO NOT COPY